असली नायक-नायिकाएं

"मदन जी, 'स्वच्छता अभियान' का हमारा वह प्रोजेक्ट पूरा हो गया क्या, जो हमने पुल के साथ लगती सड़क पर शुरू करवाया था?" शहर के मेयर ने अपने सेक्रेटरी से पूछा।

"जी हां सर, पहले तो वहां इतनी गंदगी थी कि कोई वहां से गुजरने की सोच भी नहीं सकता था, परंतु अब वह जगह इतनी अच्छी हो गई है कि कोई सोच भी नहीं सकता कि वहां कभी कोई गंदगी रही होगी", सेक्रेटरी ने खुशी के भाव चेहरे पर लाते हुए कहा।

"अभी तो शुरुआत है मदन जी, आगे-आगे देखियेगा और क्या-क्या होता है वहां। इस जगह को तो मैं शहर की सबसे अच्छी जगह बनाऊँगा।" मेयर साहब ने मुस्कुराते हुए कहा।

"वह कैसे सर?" सेक्रेटरी के चेहरे पर जिज्ञासा के भाव थे।

"सबसे पहले तो वहां हम टाइलें लगवा कर सड़क को दुरुस्त करेंगे। फिर उसके आसपास की खाली जगह पर पेड़-पौधे लगवाएंगे, और उठने-बैठने के लिए बेंच भी, क्योंकि वहां पर ट्रैफिक तो होता नहीं, तो वह एक पार्क की तरह बन जाएगा, जहां भविष्य में छोटे-बड़े संगीत और साहित्य के कार्यक्रम करवाए जा सकेंगे। दूसरा वहां की दीवारों पर हल्के रंग का पेंट करवाना है, और फिर उस पर नायक-नायिकाओं के चित्र बनवाने हैं।" मेयर साहब ने कहा।

"जी समझ गया, हो जाएगा सर। पर सर, एक बात बताइए कि कौन-कौन से नायक-नायिकाओं के चित्र बनवायेंगे आप? मेरा मतलब बहुत सारे नाम हैं नए-पुराने मिलाकर। तो...?" सेक्रेटरी ने सवाल उठाया।

"उन फिल्मी नायक-नायिकाओं के नहीं मदन जी, मैं असली नायक-नायिकाओं की बात कर रहा हूं...।" मेयर साहब फिर मुस्कुराए।

"कौन असली नायक-नायिकाएं सर?" मदन जी के कुछ पल्ले नहीं पड़ा।

"अरे हमारे वही सफाई कर्मचारी जिन्होंने इतनी मेहनत से दिन-रात एक करके इस 'स्वच्छता अभियान' को अंजाम दिया है, और इस जगह को इतना सुंदर बनाया है कि जिसने आपको भी प्रशंसा करने पर मजबूर कर दिया है।" मेयर साहब ने खुलासा किया।

"मगर यह विचार तो आपका ही था न सर?" सेक्रेटरी ने कहा।

"विचार होने से क्या होता है, यह तो किसी को भी आ सकता है। पर असली काम तो इस पर अमल करना और उसे मुकाम तक पहुँचाना है, जो हमारे इन कर्मचारियों ने किया है। इसीलिए इसका श्रेय भी इन्हीं को जाता है। यही हैं असली नायक-नायिकाएं।" मेयर साहब ने कहा।

"जी सर, समझ गया।" सेक्रेटरी ने सहमति से सिर हिला दिया।

"और हां, जब भी उस जगह का उद्घाटन किया जाएगा, इन्हीं नायक-नायिकाओं के हाथों होगा, यह बात भी अभी से नोट कर लीजिएगा...", कहकर मेयर साहब उठकर चेंबर से चले गए।

- विजय कुमार,
सह-संपादक, शुभ तारिका (मासिक पत्रिका)